महामत कहे पीछे न देखिए, नहीं किसी की परवाहे।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दे अरवाहे।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि पीछे माया में मत देखो और माया वालों की परवाह मत करो। धाम की एक चाहना हृदय में लेकर तन को छोड़ दो।

।। प्रकरण ।। ८७ ।। चौपाई ।। १२२७ ।।

राग श्री

सैयां हम धाम चले।। टेक ।।

जो आओ सो आइयो, पीछे रहे ना एक खिन।
हम पीठ दई संसार को, जाए सुरत लगी वतन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साथजी! मैं इस तरह से परमधाम चलती हूं। अब तुमको आना हो तो आओ। हम अब आपकी एक पल के लिए भी इन्तजार न करेंगे। हमने श्री राजजी महाराज के चरणों में ध्यान लगाकर संसार को छोड़ दिया है।

सुध महूरत ले कूच किया, साइत देखी अति सारी।
अब दौड़ सको सो दौड़ियो, न रहे दौड़ पकड़ी हमारी।। २ ।।

मैंने इस समय को शुभ मुहूर्त और अच्छी घड़ी समझा, क्योंकि इस समय मेरा चित्त माया को छोड़कर श्री राजजी महाराज के चरणों में लगा। अब तुम अपना चित्त माया से हटाकर मेरे साथ आ सको तो आ जाओ। मेरी चाल को अब कोई नहीं पकड़ सकेगा, अर्थात् मेरे रास्ते में अब कोई आड़ा नहीं आ सकेगा।

कोई दिन राह देखी साथ की, पीछे नजर फिराए।
पोहोंचे दिन आए आखिर, अब हम रहयो न जाए।। ३ ।।

मैं कुछ दिन तक तो माया में ही रहकर सुन्दरसाथ को जगाने में लगी रही अर्थात उनकी राह देखी। आखिरत के समय के लिए जो भविष्यवाणियां की गई थीं, वह समय अब आ गया है। अब हम और अधिक तुम्हारा इन्तजार नहीं करेंगे।

हम संग चलो सो ढील जिन करो, छोड़ो आस संसार।
सुरत हमारी कछू ना रही, हम छोड़ी आस आकार।। ४ ।।

मेरे साथ चलना हो तो संसार की चाहना छोड़ दो। मेरी माया में कोई चाहना नहीं रह गई और हमने शरीर की भी चिन्ता छोड़ दी है।

नेक बसे हम बृज में, नेक बसे रास मांहें।
आगे तो धाम आइया, तब तो आंखें खुल जाए।। ५ ।।

कुछ समय तक हमने बृज का आनन्द लिया। कुछ समय रास का आनन्द लिया और अब जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से आंखें खुलीं तो घर की पहचान हुई। यह पहचान बृज रास में नहीं थी।

साथ चले जो ना चलिया, ताए लगसी आग दोजक।
तलफ तलफ जीव जाएसी, जिन जानो यामें सक।। ६ ।।

अब जो मेरे कदमों पर कदम नहीं रखेगा (मेरी चाल नहीं चलेगा) उसे दोजख की आग में जलना पड़ेगा और तड़प-तड़पकर मरना होगा। इसमें किसी तरह से संशय नहीं लाना।

Nijanand App

पीछे अटकाव न राखो रंचक, जो आओ संग हम।
तुम जानोगे वह नेक है, पर जरा होसी जुलम।। ७ ।।

अगर मेरे कदमों पर कदम रखना चाहते हो (मेरे साथ आना चाहते हो) तो माया की चाहना बिलकुल छोड़ दो। तुम माया को अच्छा समझते हो परन्तु तुम्हारे लिए इसकी थोड़ी सी चाहना भी घातक हो जाएगी।

जो न आवे सो जुदा होइयो, ना तो होसी बड़ी जलन।
हम तो चले धाम को, तुम रहियो माहें करन।। ८ ।।

जिनको मेरे रास्ते नहीं चलना है वह अलग हो जाओ। नहीं तो दोरंगी चाल चलकर दुःखी हो जाओगे। हम तो धाम की राह पर चल रहे हैं। तुम्हें माया में रहना है, तो रहो।

हम छोड़े सुख सुपन के, आए नजरों सुख अखंड।
विरहा उपज्या धाम का, पीछे हो गई आग ब्रह्मांड।। ९ ।।

हमने सपने के सुख को छोड़ दिया है। अखण्ड सुख दिखने लगे हैं। इससे हमें धाम से बिछुड़ने का विरह सता रहा है और इससे सारा संसार आग के समान दुःखदायी लग रहा है।

मैं आग देऊं तिन सुख को, जो आड़ी करे जाते धाम।
मैं पिंड न देखूं ब्रह्मांड, मेरे हिरदे बसे स्यामा स्याम।। १० ।।

धाम के रास्ते चलने में संसारी सुख जो आड़े आते हैं, उनको मैं त्याग देती हूं। मैं अपने शरीर को और रिश्तेदारों को नहीं देखती हूं। मेरे हृदय में श्री राजश्यामा जी विराजमान हो गए हैं।

कई किताबें करी साथ कारने, सो भी गाई जगावन।
ए सुन के जो न दौड़िया, जिमी ताबा होसी तिन।। ११ ।।

सुन्दरसाथ को जगाने के वास्ते मैंने बहुत सारी किताबें लिखी हैं। इस जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी को सुनकर भी जो नहीं चलेगा, उसके लिए यह संसार अग्नि के समान हो जाएगा।

कई लोभें लिए लज्या लिए, कई लिए अहंकार।
यों छलें पीछे कई पटके, जो केहेते हम सिरदार।। १२ ।।

कई सुन्दरसाथ लोभ, लोक-लाज और अपने अहंकार में डूबे हैं। वह कहते हैं कि हम ब्रह्मसृष्टि हैं, परन्तु माया की चाहना ने उन्हें पीछे पटक दिया।

विखे स्वाद जिन लग्यो, सो लिए इंद्रियों घेर।
जो एक साइत साथ आगे चल्या, पीछे पड़े मांहें करन अंधेर।। १३ ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस माया के सुख जहर के समान हैं, इसलिए इन सुखों के पीछे मत पड़ना। यदि एक क्षण के लिए भी तुम अपनी गुण, अंग, इन्द्रियों को इसमें लगाओगे, तो बाद में घोर अन्धकार में डूब जाओगे।

गुन अवगुन सबके माफ किए, जो रहो या चलो हम संग।
हम पीछे फेर न देखहीं, पिउसों करें रस रंग।। १४ ।।

मेरी सेवा करके जो मुझे माया के सुख देना चाहते हैं वह सेवा धाम के रास्ते में दुःखदायी है। ऐसे सुन्दरसाथ के गुणों को माफ कर दिया और अवगुण करने वालों की तरफ ध्यान ही नहीं दिया, अर्थात् इस तरह से दोनों को माफ किया। अब तुम चाहो तो माया में रहो और चाहो तो हमारे साथ हमारी चाल चलो। अब हम पीछे तुम्हारी तरफ नहीं देखेंगे। धनी के आनन्द में अपने चित्त को लगाएंगे।

Nijanand App

साथ होवे जो धाम को, सो भूले नहीं अवसर।
सनमंधी जब उठ चले, तब पीछे रहे क्यों कर।। १५ ।।

जो सुन्दरसाथ परमधाम के होंगे, वह इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। जब उनके परमधाम के सम्बन्धी माया से चित्त हटाकर धनी के रंग में मग्न होने लगे, तो वह पीछे कैसे रहेंगे?

महामत कहें मेहेबूब का, सांचा स्वाद आया जिन।
परीछा तिनकी प्रगट, छेद निकसें बान वचन।। १६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं जिनको धनी का सच्चा स्वाद लग गया उनको यह वचन बाण की तरह लगेंगे। यह उनकी ब्रह्मसृष्टि होने की परीक्षा है।

॥ प्रकरण ॥ ८८ ॥ चौपाई ॥ १२४३ ॥

राग वसंत

चलो चलो रे साथ, आपन जईए धाम।
मूल वतन धनिएं बताया, जित ब्रह्मसृष्ट स्यामा जी स्याम।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! चलो, माया से चित्त हटाकर श्री राजजी के चरणों में चित्त लगाएं। धनी ने अपने मूल घर की पहचान बता दी है, जहां मूल मिलावे में श्री राजजी, श्यामाजी और ब्रह्मसृष्टि हैं।

मोहोल मंदिर अपने देखिए, देखिए खेलन के सब ठौर।
जित है लीला स्याम स्यामा जी, साथ जी बिना नहीं कोई और।। २ ।।

अब यहां बैठे-बैठे अपने परमधाम के मोहोल, मन्दिर और खेलने के सब ठिकाने चितवन से देखिए। जहां हम श्री राज श्यामाजी के साथ लीला करते हैं और वहां सुन्दरसाथ के अलावा और कोई नहीं है।

रेत सेत जमुना जी तलाव, कई ठौर बन करे विलास।
इस्क के सारे अंग भीगल, रेहेस रंग विनोद कई हांस।। ३ ।।

जमुनाजी के किनारे की सुन्दर रेत, हौज कौसर तालाब और वनों के बीच में खेलने के कई ठिकाने जहां हम इश्क में भीगे हुए श्री राजजी के साथ हंसी और आनन्द करते हैं, वह सब चितवन से देखो।

पसु पंखी माहें सुन्दर सोभित, करत कलोल मुख मीठी बान।
अनेक बिध के खेल जो खेलत, सो केते कहूं मुख इन जुबान।। ४ ।।

इन वनों में पशु, पक्षी सुन्दर शोभायुक्त हैं और मीठी वाणी बोलकर रिझाते हैं। वह तरह-तरह के खेल खेलते हैं। ऐसे अखण्ड सुखों का इस मुख और जबान से कैसे बयान करूं?

ऐही सुरत अब लीजो साथ जी, भुलाए देओ सब पिंड ब्रह्मांड।
जागे पीछे दुख काहे को देखें, लीजे अपना सुख अखंड।। ५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! अब अपने तन और घर परिवार को भूल कर अपनी सुरता को इन अखण्ड सुखों में लगाओ। जब अपने को अखण्ड सुखों की पहचान हो गई है, तो अब जागृत होने पर भी दुःख क्यों देखें।

साथ मिल तुम आए धाम से, भूल गए सो मूल मिलाप।
भूलियां धाम धनी के वचन, न कछू सुध रही जो आप।। ६ ।।

हे साथजी! तुम मिलकर परमधाम से आए थे और यहां आकर अपने मूल मेले को भी भूल गए। धाम को और धनी के वचनों को भी भूल गए और अपने आप की भी सुध नहीं रही।

Nijanand App